## उत्पादन के साधन
## (FACTORS OF PRODUCTION)

जिन साधनों की सहायता से वस्तुओं तथा सेवाओं का उत्पादन होता है, उन्हें उत्पादन का साधन कहा जाता है। **प्रो. बेन्हम** के अनुसार—"जो उत्पादन में सहयोग देता है, वह उत्पादन का साधन है" (Anything which contributes towards output is a factor of production)। उदाहरण के लिये, कारखाने में उत्पादन की क्रिया का संचालन करने के लिये भूमि, मकान, मशीन, मजदूर तथा संगठन कर्ता (व्यवस्था) की आवश्यकता पड़ती है। इसी प्रकार कृषि-उत्पादन के लिये भूमि, हल-बैल, ट्रैक्टर, मजदूर, खाद, बीज, मोटर पम्प इत्यादि की आवश्यकता पड़ती है, ये उत्पादन के साधन के अन्तर्गत आते हैं।

Scanned with CamScanner

उत्पादन के मुख्य साधन पाँच हैं :

1. भूमि (Land), 2. श्रम (Labour), 3. पूँजी (Capital), 4. व्यवस्था या संगठन (Organisation), एवं 5. साहस (Enterprise)।

1. **भूमि** (Land)—साधारण बोल-चाल की भाषा में भूमि का आशय, केवल जमीन, की ऊपरी सतह से लगाया जाता है। किन्तु, अर्थशास्त्र में भूमि का आशय केवल जमीन की ऊपरी सतह से नहीं है, बल्कि भूमि का आशय समस्त प्रकृति-प्रदत्त पदार्थों से है; जैसे—भूमि की ऊपरी सतह, जंगल, पहाड़, नदी, समुद्र, हवा, धूप, खनिज पदार्थ आदि। प्रकृति के इन मुफ्त उपहारों से उत्पादन की प्रक्रिया में सहायता मिलती है। हालाँकि, भूमि उत्पादन का एक निष्क्रिय साधन है, फिर भी उत्पादन के अन्य समस्त साधनों की यह आधारशिला है। अतः इसे उत्पादन का मौलिक साधन की संज्ञा दी गयी है।

2. **श्रम** (Labour)—श्रम उत्पादन का एक अत्यन्त ही महत्वपूर्ण साधन है। श्रम के अभाव में उत्पादन के अन्य साधन निरर्थक प्रतीत होते हैं। श्रम के अन्तर्गत शारीरिक व मानसिक दोनों प्रकार के श्रम सम्मिलित किये जाते हैं। इसका उद्देश्य धन का उत्पादन करना है। अतः अर्थशास्त्र के अन्तर्गत श्रम का अर्थ उन सभी शारीरिक व मानसिक प्रयत्नों से है, जो धनोपार्जन के उद्देश्य से किये जाते हैं, आनन्द के लिये नहीं। श्रम उत्पादन का एक सक्रिय (Active) साधन है। मनुष्य अपने श्रम द्वारा अन्य साधनों को उपयोगी बनाता है। जंगल में फल तभी उपयोगी हो सकते हैं, जब उन्हें तोड़ा जाय। इस प्रकार, फल तोड़ने का काम अर्थशास्त्र में 'श्रम' कहलाता है और इसे श्रमिक ही पूरा करते हैं।

3. **पूँजी** (Capital)—साधारण बोल-चाल की भाषा में पूँजी का आशय रुपये-पैसे से लगाया जाता है, लेकिन अर्थशास्त्र के अन्तर्गत पूँजी का अर्थ व्यापक रूप में लगाया जाता है। अर्थशास्त्र में पूँजी सम्पत्ति का वह भाग है, जिसका प्रयोग अधिक सम्पत्ति (धन) के उत्पादन के लिये किया जाता है। पूँजी में वे समस्त वस्तुएँ सम्मिलित की जाती हैं, जिनको मनुष्य स्वयं उत्पन्न करता है और फिर अन्य वस्तुओं के उत्पादन में प्रयोग करता है। मशीन, मकान, कच्चा माल, पक्का माल, मुद्रा आदि जो भी चीजें अतिरिक्त सम्पत्ति को पैदा (उत्पादन) करने के काम में प्रयुक्त होती हैं, उन्हें पूँजी में सम्मिलित किया जाता है। **प्रो. मार्शल** के अनुसार, "प्रकृति की निशुल्क देन को छोड़कर वे सारी सम्पत्तियाँ जिनसे आय प्राप्त होती है, पूँजी कही जाती हैं।"

4. **व्यवस्था या संगठन** (Organisation)—वर्तमान समय में उत्पादन की क्रिया अत्यन्त जटिल हो गयी है। उत्पादन का कार्य बड़े पैमाने पर होने लगा है। अतः उत्पादन के विभिन्न साधनों को एक स्थान पर एकत्रित करके उन्हें उत्पादन की क्रिया में प्रयोग करने की आवश्यकता होती है। इसी क्रिया को व्यवस्था या संगठन कहते हैं। जो इस क्रिया को सम्पन्न करता है, उसे व्यवस्थापक कहते हैं। कच्चा माल खरीदना, पक्का माल बेचना, मशीनों की मरम्मत कराना, उत्पादन कार्य का निरीक्षण करना आदि काम व्यवस्थापक के होते हैं।"

5. **साहस** (Enterprise)—उत्पादन का कार्य जोखिम (Risk) से परिपूर्ण होता है। उत्पादन का कार्य हमेशा भविष्य की माँग के आधार पर किया जाता है। यह अनुमान सही भी हो सकता है और गलत भी। यदि अनुमान गलत निकला तो उत्पादक को भारी नुकसान उठाना पड़ सकता है। जो व्यक्ति इन जोखिमों को उठाता है, उसे साहसी (Entrepreneur) कहते हैं।

## उत्पादन का कौन-सा साधन सर्वश्रेष्ठ है ?
## (WHICH FACTOR OF PRODUCTION IS THE BEST ?)

उत्पादन के पाँच साधनों में से कौन-सा साधन महत्वपूर्ण है और कौन-सा नहीं, वस्तुतः इस प्रश्न का उत्तर देना एक अत्यन्त ही जटिल काम है। यही कारण है कि इस सन्दर्भ में अर्थशास्त्रियों के बीच भी मतभेद है। कुछ अर्थशास्त्रियों के अनुसार भूमि ही उत्पादन का महत्वपूर्ण

Scanned with CamScanner

साधन है क्योंकि इसकी अनुपस्थिति में उत्पादन की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। कुछ ने श्रम को महत्वपूर्ण बताया क्योंकि श्रम से ही भूमि पर उत्पादन किया जा सकता है। अर्थात् श्रम के अभाव में भूमि व्यर्थ प्रतीत होती है। इसी प्रकार, कुछ ने पूँजी को, कुछ ने संगठन को और कुछ ने साहस को महत्वपूर्ण बताया। किन्तु, वास्तविकता यह है कि उत्पादन के समस्त साधन एक-दूसरे से अलग नहीं किये जा सकते, क्योंकि यदि इन्हें अलग-अलग कर दिया जाय तो उत्पादन कदापि सम्भव नहीं होगा।

जैसे-जैसे मनुष्य विकसित होता गया, उनकी आवश्यकताएँ बढ़ती गयीं और उत्पादन की प्रक्रिया भी जटिल होती गयी। प्रारम्भ में मनुष्य की आवश्यकताएँ सीमित थीं और तब वह उनकी पूर्ति मात्र प्राकृतिक साधनों से ही कर लेता था। अतः उस काल में भूमि ही महत्वपूर्ण साधन मानी जाती थी। जब मानवीय आवश्यकताएँ बढ़ने लगीं तो श्रम महत्वपूर्ण साधन बन गया। औद्योगिक क्रान्ति ने पूँजी को महत्वपूर्ण बना दिया। वर्तमान समय में संगठन और साहस उत्पादन का पूरक साधन माने जा रहे हैं।

निष्कर्ष के तौर पर कहा जा सकता है कि उत्पादन के सभी साधन महत्वपूर्ण हैं। अलग-अलग स्थिति में वे स्वतः ही महत्वहीन हो जाते हैं। इनका अलग-अलग अस्तित्व वैसा ही है जैसा कि एक व्यक्ति जो चाय की चाह रखता है और वह पानी, चीनी, चाय पत्ती, स्टोव आदि को अलग-अलग रख देता है अर्थात् उनका संयोग (Combination) तैयार नहीं करता है। ऐसी स्थिति में जिस प्रकार उस व्यक्ति को चाय कदापि नहीं मिल सकती उसी प्रकार उत्पादन के विभिन्न साधनों को अलग-अलग कर देने पर उत्पादन के उद्देश्य को कभी भी प्राप्त नहीं किया जा सकता है।

## उत्पत्ति के साधनों के सम्बन्ध में आधुनिक अर्थशास्त्रियों के विचार
## (OPINION OF MODERN ECONOMISTS ON FACTORS OF PRODUCTION)

उत्पत्ति के साधनों के सम्बन्ध में नयी विचारधाराएँ प्रस्तुत करने वाले अर्थशास्त्रियों में से मुख्य हैं—**वाइजर** (Wiser), **विकस्टीड** (Wicksteed), **बेन्हम** (Benham) **तथा डेवनपोर्ट** (Davenport)। इनके अनुसार उत्पादन के साधनों को पाँच भागों में बाँटना उचित प्रतीत नहीं होता है। उनका कहना है कि उत्पादन का कोई भी साधन एक रूप या समान (Homogeneous) नहीं होता है। उर्वरा शक्ति में अन्तर होने के कारण भूमि भी कई प्रकार की होती है। इसी प्रकार, कार्यक्षमता में विभिन्नता होने के कारण श्रम भी कई प्रकार के होते हैं। इससे निष्कर्ष निकलता है कि उत्पत्ति के साधन केवल पाँच नहीं बल्कि अनेक हैं। इस सन्दर्भ में **प्रो. बेन्हम** का कथन है "कोई भी चीज जो उत्पादन के काम में योगदान करती है, उत्पत्ति का साधन है।" इस प्रकार, उत्पत्ति के साधन लाखों या करोड़ों हो सकते हैं।

**वाइजर** नामक अर्थशास्त्री ने तो उत्पत्ति के साधनों को मात्र दो भागों में बाँटा है :

(1) विशिष्ट साधन (Specific factors), तथा

(2) अविशिष्ट साधन (Non-specific factors)।

1. **विशिष्ट साधन** (Specific factors)—विशिष्ट साधन वे हैं, जिनका प्रयोग एक ही प्रकार से किया जा सकता है। जैसे: कपड़े की सिलाई, मशीन केवल कपड़े की सिलाई के ही काम में आती है, रेल का इंजन, केवल रेल गाड़ी चलाने के ही काम आता है। ऐसे साधनों को ही विशिष्ट साधन कहा जाता है।

2. **अविशिष्ट साधन** (Non-specific factors)—अविशिष्ट साधन वे हैं, जिनका प्रयोग वैकल्पिक ढंग (विभिन्न प्रकार) से किया जा सकता है। उदाहरण के लिये, भूमि का प्रयोग कृषि करने, मकान बनाने, तालाब बनाने, कल-कारखाने स्थापित करने आदि में किया जा सकता है। इसी प्रकार एक मजदूर खेत में काम कर सकता है, कारखाने में काम कर सकता है, रिक्शा चला सकता है आदि।

Scanned with CamScanner

पुनः आधुनिक अर्थशास्त्रियों का कथन है कि साधनों का पुराना वर्गीकरण इसलिये उचित नहीं है कि पुराना वर्गीकरण के अन्तर्गत यह मान लिया गया है कि प्रत्येक साधन की कुछ खास विशेषताएँ होती हैं जोकि अन्य साधनों में नहीं होती हैं। उदाहरण के लिये, भूमि में सीमितता की विशेषता है। किन्तु सीमितता का गुण केवल भूमि में ही नहीं बल्कि अन्य साधनों में भी यह गुण पाया जाता है। उदाहरण के लिये, किसी विशेष समय में 500 श्रमिकों की आवश्यकता है, किन्तु यदि बाजार में केवल 400 श्रमिक ही उपलब्ध हैं, तो कहा जा सकता है कि श्रम में भी सीमितता का गुण विद्यमान है।

जहाँ तक भूमि में सीमितता का गुण है, कुछ हद तक इसे दूर किया जा सकता है; जैसे—एक-मंजिला मकान नहीं बनाकर दस-मंजिला मकान बनाया जाना, समुद्र को सुखाकर भूमि में परिणत कर कृषि किया जाना आदि। इसी प्रकार, कृषि के क्षेत्र में काम करने वाले श्रमिकों की जगह पर ट्रैक्टर का प्रयोग किया जाना आदि। इस आधार पर साधनों का नया वर्गीकरण वैज्ञानिक प्रतीत होता है, किन्तु प्रारम्भिक स्तर के विद्यार्थियों के लिये साधन का पुराना वर्गीकरण ही सुविधाजनक प्रतीत होता है।

Scanned with CamScanner